ISSN : 2229-4767
RNI No. : 72297/99

अभिनव क़दम 43-44

विशेषांक : किसान और किसानी : खंड-1

दस्तावेज

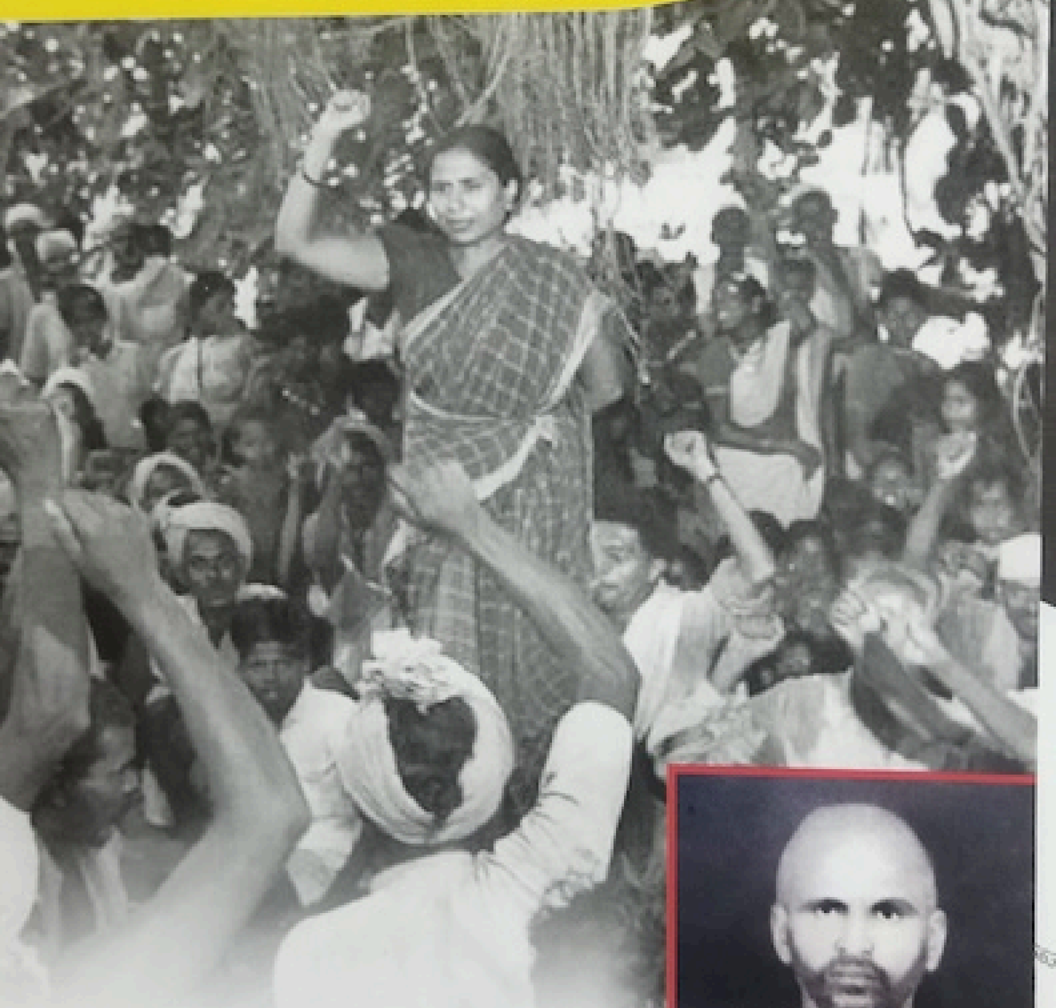

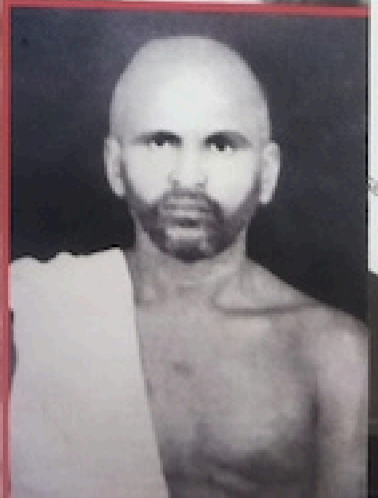

संपादक : जयप्रकाश 'धूमकेतु'

अतिथि संपादक

बिपिन तिवारी

अटल तिवारी

ISSN 2229-4767 RNI No. 72297|99

अभिनव क़दम -43-44

(संयुक्तांक)

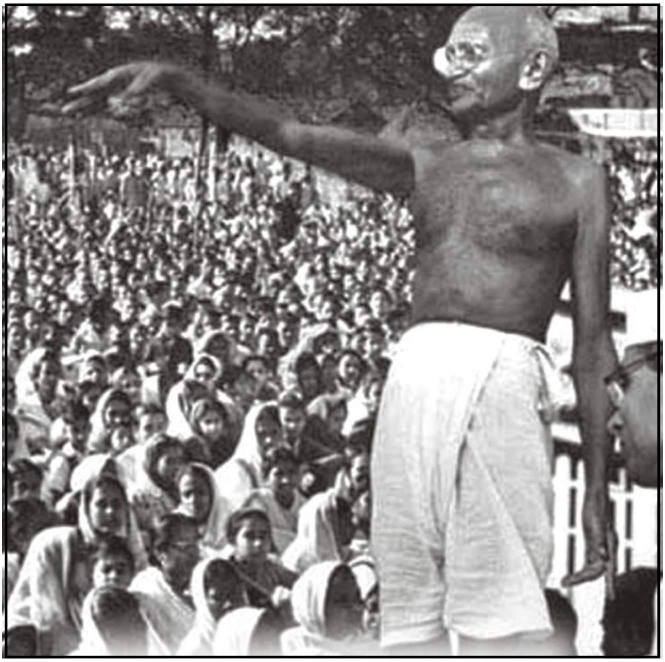

किसान विशेषांक :

किसान और किसानी

दस्तावेज–खण्ड 1

सम्पादक : जयप्रकाश 'धूमकेतु'
अतिथि सम्पादक : बिपिन तिवारी, अटल तिवारी

ISSN 2229-4767 **ABHINAV KADAM** **RNI No. 72297|99**

वर्ष : 25 अंक : 43-44 (संयुक्तांक) जून 2020-मई 2021

अतिथि सम्पादक

बिपिन तिवारी

अटल तिवारी

राहुल सांकृत्यायन सृजन पीठ के लिए स्वामी, प्रकाशक एवं संपादक : जयप्रकाश धूमकेतू द्वारा प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स दिल्ली–95 से मुद्रित एवं 223-प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा, मऊनाथभंजन, मऊ (उ.प्र.) 275101 से प्रकाशित।

अभिनव क़दम -43-44
(संयुक्तांक)

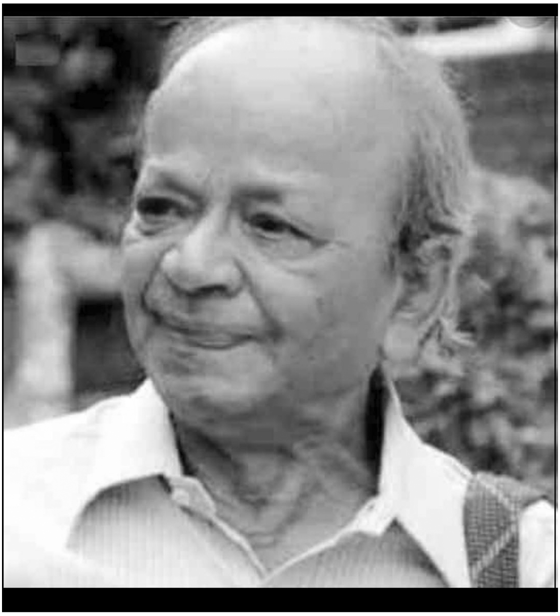

यह अंक
मैनेजर पाण्डेय
की स्मृति को समर्पित है!

अभिनव क़दम -43-44 *(संयुक्तांक)*

संपादक

जयप्रकाश 'धूमकेतु'

patrika.abhinavkadam@gmail.com

dhoomketu223@gmail.com

अतिथि संपादक

बिपिन तिवारी

bipintiwari85@gmail.com

अटल तिवारी

ataltewari.bjmc@rla.du.ac.in

उप संपादक

अमरेन्द्र कुमार शर्मा

amrendrakumarsharma@gmail.com

फार्म :: 4

प्रेस तथा पुस्तक पंजीयन अधिनियम के अन्तर्गत 'अभिनव कदम' नामक पत्रिका से संबंधित स्वामित्व और अन्य बातों का विवरण–

1. **प्रकाशन**	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ (उ.प्र.)
2. **प्रकाशन की आवर्तिता**	:	अर्द्धवार्षिक
3. **मुद्रक का नाम**	:	जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं?	:	हाँ
पता	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ (उ.प्र.)
4. **प्रकाशक का नाम**	:	जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं?	:	हाँ
पता	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ (उ.प्र.)
5. **संपादक का नाम**	:	जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं?	:	हाँ
पता	:	223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ (उ.प्र.)
6. **उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पत्रिका के मालिक और कुल पूंजी के एक-एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार या भागीदार हैं**	:	**राहुल सांस्कृत्यायन सृजन पीठ** साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, 'मंथन' 223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ (उ.प्र.), पिन-275101

मैं जयप्रकाश धूमकेतु एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सही है। ***–जय प्रकाश धूमकेतु***

संस्थापक–संरक्षक : अब्दुल बिस्मिल्लाह, जन संस्कृति के पक्ष में जर्नल

वर्ष : 25 अंक : (43-44) (संयुक्तांक) जून 2020 - मई 2021

अभिनव क़दम (43-44) *(संयुक्तांक)*

संपादक : **जयप्रकाश धूमकेतु**
उप-संपादक : अमरेन्द्र कुमार शर्मा
अतिथि संपादक : बिपिन तिवारी (गोवा)
अटल तिवारी (दिल्ली)
संपादक मण्डल : डॉ. अवधेश प्रधान
डॉ. गोपाल प्रधान, मनोज सिंह
डॉ. अमित राय, शिवकुमार पराग
प्रसार व्यवस्था : **श्रीमती राजेश्वरी**

संपर्क :
'प्रकाश निकुंज'
223, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा
मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)–275101
मोबाइल : 09415246755, 08429366755
ई-मेल : (i) patrika.abhinavkadam@gmail.com
(ii) dhoomketu223@gmail.com
(iii) amrendrakumarsharma@gmail.com
वेबसाइट : www.abhinavkadam.com, www.rahulsankrityan.com

सहयोग राशि

यह अंक	**200.00**
संस्थाओं के लिए	**300.00**
विदेश में	**$ 25**
आजीवन सदस्यता	**5000.00**

प्रकाशक : **राहुल सांकृत्यायन सृजन पीठ**, मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)
शब्द संयोजन : श्वेताजाब्स, 68 बहादुरगंज, इलाहाबाद E-mail : vs430186@gmail.com
मुद्रण : प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, ए-21, झिलमिल एंड, इंडस्ट्रीयल एरिया, शाहदरा, दिल्ली-95
e-mail: pd.press@gmail.com

संपादन/संचालन/अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव कदम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव कदम में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रम

अपनी बात

“पगड़ी संभाल जट्टा” 1

सम्पादकीय

क्या भारत कृषि प्रधान देश रहा है? 5

किसान और साहित्य

1. धरतीमाता/प्रतापनारायण मिश्र 13
2. किसानों का सर्वनाश/सखाराम गणेश देउस्कर, अनुवाद : बाबूराव विष्णु पराड़कर 16
3. किसानों की शिक्षा/माधवराव सप्रे 41
4. भारतीय किसान/गणेशशंकर विद्यार्थी 45
5. हतभागे किसान/प्रेमचंद 50
6. किसानों सावधान/राहुल सांकृत्यायन 54
7. किसानों के संकट/माखनलाल चतुर्वेदी 58
8. किसान और उनका साहित्य/सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ 62
9. धरती/श्री वासुदेवशरण अग्रवाल 65
10. किसानों की दुर्दशा/नवजादिक लाल श्रीवास्तव 72
11. किसानों का पतन/देवनारायण द्विवेदी 74
12. प्राचीन समय में भारतीय कृषकों की सामाजिक व आर्थिक दशा/ श्रीयुत पं. रुद्रदत्त भट्ट 76
13. हमारी सरकार और खेती का लगान/श्रीयुत के.डी. मालवीय 83
14. भारतीय किसान/श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद मिश्र, विद्यार्थी 90
15. भारतवर्ष के किसान/श्रीयुत मुरलीमनोहर दीक्षित, बी.ए., एल.एल.बी. 94
16. कृषि और कृषि शिक्षा/कार्यी 99
17. अन्नदाता-किसानों पर घोर संकट!/राम सेवक त्रिपाठी 105

किसान और राजनीति

18. खेती की वर्तमान स्थिति/महात्मा ज्योतिबा फुले 107
19. भारतवर्ष—‘दरिद्रता का घर’/लाला लाजपतराय 121
20. श्रमजीवियों को संदेश/राधामोहन गोकुल 137

21. अवध किसान सभा, प्रतापगढ़ की नियमावली/बाबा रामचंद्र 139
22. खेड़ा के लोगों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया/
सरदार वल्लभभाई पटेल 141
23. बेचारा किसान/सर छोटूराम 146
24. भारतीय किसान/लाला हरदयाल 155
25. भारतीय कृषक/आचार्य नरेन्द्रदेव 162
26. किसान दुश्मनों की पहचान करें और लड़ना सीखें/
स्वामी सहजानंद सरस्वती 178
27. हमारा अन्नदात/श्री हरिभाऊ उपाध्याय 225
28. किसानों! वर्ग एकता कायम करो/प्रो. एन.जी. रंगा 231
29. क्या भारत कृषि प्रधान देश है?/—चौधरी मुख़्त्यार सिंह 234
30. बज्जुर है छाती किसान की/श्रीचन्द्र जैन 240
31. किसानों को हक देने का समय/शरद जोशी 244

किसानों से संवाद

32. राष्ट्र को चूसना/दादा भाई नौरोजी 248
33. 25 सैकड़ा लगान कम होना चाहिए/पं. मदनमोहन मालवीय 251
34. ब्रिटिश हुकूमत और राजे-महाराजों को चुनौती/महात्मा गांधी 253
35. किसानों का संगठन1/पंडित जवाहरलाल नेहरू 261
36. भारत का किसान/राममनोहर लोहिया 264
37. किसान रामसम्मुख का हरकोर्ट बटलर के नाम पत्र/रामसम्मुख 282
38. किसानों को सब्सिडी नहीं, सही कीमत देने की जरूरत है :
महेंद्र सिंह टिकैत 285

किसान और बुद्धिजीवी

39. हिंदुस्तान की आर्थिक अवस्था का दिग्दर्शन/
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 290
40. भारत का कृषि-प्रधान बनाया जाना/—डॉक्टर प्राणनाथ 296
41. भारतीय कृषक /श्रीयुत रामचन्द्र वर्मा 299
42. धरती का भार/डॉ. ज़ैनुल आब्दीन अहमद 308
43. भारतीय कृषि का औपनिवेशिक चरित्र/ए.आर. देसाई 316
44. कृषि विकास एवं हरित क्रांति/आदित्य मुखर्जी 323
45. किसान विद्रोह का घोषणापत्र/किशन पटनायक 336

अपनी बात

''पगड़ी संभाल जट्टा''

केन्द्र की मोदी सरकार ने 05 जून 2020 का जरिए अध्यादेश और सितंबर 2020 में संसद से बगैर बहस के तीन कृषि कानून पारित कर दिया था। इसके साथ ही सत्ता की किसान विरोधी नियति का प्रस्फुटन '**आपदा में अवसर की तलाश**' के जन विरोधी-किसान विरोधी उदाहरण के रूप में दुनिया के सामने आया। यह वही दौर था जब पूरी मानवजाति कोविड महामारी की चपेट में आकर जीवन-मृत्यु के बीच संघर्ष कर रही थी। 2020 में लाए गए जनद्रोही किसान विरोधी तीन कृषि कानूनों से लगभग सवा सौ साल पहले ही 1907 में ब्रिटिश सरकार ने तीन कृषि कानून लाकर कृषि को अपने नियंत्रण में लेने की कोशिश की थी जिसके विरुद्ध शहीद-ए-आजम भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह के नेतृत्व में लोकप्रिय आंदोलन चला था जिसे '**पगड़ी संभाल जट्टा आंदोलन**' कहा जाता है। अंततः आंदोलन के दबाव में ब्रिटिश सरकार को तीनों कानून वापस लेने पड़े थे। 2020 के कृषि कानून भी 1907 के कानून के तर्ज पर ही लाए गए थे।

उसी दौर में मेरी निगाह यूट्यूब के 'किताबी दुनिया' पर प्रसारित एक साक्षात्कार पर पड़ी। साक्षात्कार ले रहे थे डॉ. बिपिन तिवारी जो गोवा विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य हैं। बिपिन तिवारी के प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे डॉ देवेन्द्र सिंह, कथाकार, आचार्य-हिन्दी विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय विलासपुर (छत्तीसगढ़)। उन दिनों तीन कृषि कानूनों के विरुद्ध किसान देश भर में आंदोलित हुए और दिल्ली की परिधि पर सिंधू बार्डर, टिकरी बार्डर, गाजीपुर बार्डर पर किसानों का महापड़ाव लगभग तेरह महीनों तक चलता रहा। 732 किसान शहीद हो गए। 'किताबी दुनिया' में पूरे आंदोलन के दौरान बौद्धिक विमर्श चलता रहा।

किताबी दुनिया के किसान विमर्श के चलते अभिनव क़दम के किसान केन्द्रित विशेषांक की बुनियाद पड़ी और अंक के अतिथि संपादक के रूप में डॉ बिपिन तिवारी ने दायित्व स्वीकार किया। अटल तिवारी दिल्ली में रहते हुए किसान आंदोलन को जमीनी स्तर पर देख रहे थे, जिसके चलते इस अंक की सामग्री की सघनता और समग्रता में अटल तिवारी की भरपूर रचनात्मक भूमिका को देखा जा सकता है।

ध्यातव्य है कि इस किसान विशेषांक की पूर्व पीठिका के रूप में अभिनव क़दम द्वारा **सहजानंद सरस्वती और किसान आंदोलन** को केन्द्र में रखते हुए अंक 26

एवं 27 में लगभग 1200 पृष्ठ के पूर्व प्रकाशित अंक में भविष्य में किसानों के समक्ष आने वाले संकटों के प्रति आगाह भी किया गया था। अभिनव क़दम में व्यक्त की गई चिंताएं धीरे धीरे सत्ता व्यवस्था की कारगुजारियों से सामने आने लगी। तमिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और पं.उत्तर प्रदेश के किसान खतरा भांपकर प्रतिरोध मार्च निकालने लगे। बावजूद इसके **''सत्ता की हाथी पर ऊंघता महावत है, देश मेरा लाठी, और भैंस की कहावत है''** का मुहावरा चरितार्थ होने लगा। लोकतंत्र के वजाय राजतंत्र का सेंगोल संसद के गर्भगृह में स्थापित हो गया। नागरिक समाज को प्रजा बनाने के लिए सारे औजार इस्तेमाल होने लगे। एकात्मवाद की सैद्धांतिकी का प्रयोगधर्मी राजा अमृत काल का उद्‌घोष कर चुका है। देवासुर संग्राम जारी है। अमृत, लक्ष्मी, ऐरावत, पांचजन्य देवताओं ने अपने हिस्से कर लिया है और विष कलश असुरों के हवाले। शिव की प्रतीक्षा में श्रमशील असुर समाज ''दिख जाए एक नीलकंठ विषपायी तो वसुधैव कुटुम्बकम का गल्प सच्चाई में तब्दील हो जाय, बस इसी एक उम्मीद पर जिंदा हैं। **''तू जिंदा है तो जिंदगी की जीत पर यकीन कर अगर कहीं स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर''।**

बात बोलेगी हम नहीं, भेद खोलेगी बात ही। इस भेद को तो बहुत पहले ही गोरख पाण्डेय ने खोल दिया था—**''राजा बोला रात है रानी बोली रात है मन्त्री बोला रात है सन्त्री बोला रात है ये सुबह सुबह की बात है''।**

किसानों के अद्भुत धैर्य, साहस, संकल्प और प्रतिरोध की उपज है 26 नवंबर 2020 से 11 दिसंबर 2021 तक दिल्ली की बाहरी सीमाओं पर चला किसान आंदोलन जिसने सत्ता की नीव हिलाकर रख दी और तीनों किसान विरोधी कानूनों को वापस लेना पड़ा। किसान और किसानी कॉरपोरेट के जबड़ों में जाते-जाते वापस लौट आयी। व्यवस्था का कॉरपोरेट फार्मिंग का सपना टूट गया। किसानों की जमीनें बच गयी। अपनी ही जमीन पर किसान-मजदूर समुदाय गोदान के होरी और धनिया बनते-बनते बच गए। यह जो कुछ बच गया वह संयुक्त किसान-मजदूर मोर्चे के लम्बे संघर्ष का परिणाम है। किसानों से किए गए वादों से सरकार पीछे हट गई है और पिछले दरवाजे से खेती-किसानी कॉरपोरेट को देने की तिकड़म कर रही है। स्वामिनाथन कमेटी की सिफारिशों के अनुरूप न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तय करते हुए इसकी कानूनी गारंटी के लिए आंदोलन गति पकड़ रहा है। विगत फरवरी 2024 में पंजाब, हरियाणा के किसानों ने दिल्ली घेरो का ऐलान कर जब मार्च किया तो पंजाब-हरियाणा बार्डर पर भयंकर दमन का सामना करना पड़ा।18-19 फरवरी 2024 को हरियाणा पुलिस की गोली से 20-21 वर्ष के नौजवान शुभकरण सिंह की शहादत हो गई। इस संघर्ष को प्रेरणा इतिहास में हुए किसान विद्रोहों और संघर्षों से ही मिली है।

1793 ई में लार्ड कार्नवालिस ने स्थायी बंदोबस्त की व्यवस्था लागू की। किसानों की जमीनें छीन कर जमींदारों के हवाले कर दी गई और किसानों को लगान पर खेती करने के लिए बाध्य कर दिया गया। कंपनी राज के संरक्षण में जमींदारों ने किसानों से बेतहाशा लगान वसूली की एवं बेगारी करायी। इस बेइंतहा जुल्म व शोषण के विरुद्ध कृषक समुदाय ने बार-बार विद्रोह किया। 19 वीं सदी की शुरुआत से ही किसान और आदिवासी विद्रोहों की श्रृंखला देखने को मिलती है जिसमें किसानों एवं आदिवासियों ने बहादुराना संघर्ष किए। 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की केन्द्रीय अंतर्वस्तु भी कंपनी राज संरक्षित जमींदारों के जुल्म व उत्पीड़न के विरुद्ध किसान विद्रोह ही है, जिसने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की चूले हिला दी।

स्वतंत्रता आंदोलन के पूरे दौर में किसान संघर्षों की लहरें उठती रहीं। सर छोटूराम के नेतृत्व में चले संघर्ष ने किसानों के हित में अंग्रेजी सरकार से कई कानून हासिल किए। बाबा रामचंद्र एवं मदारी पासी के नेतृत्व में 1920-22 के दौरान चले अवध के किसान आंदोलन ने अंग्रेजी सरकार और ताल्लुकदारों के जुल्म व शोषण के विरुद्ध किसानों को संगठित संघर्ष करने का हौसला दिया। सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में किसान आंदोलन ने एक नया आयाम ग्रहण किया।इस आंदोलन ने स्वाधीनता आंदोलन को तो गति दी ही अखिल भारतीय किसान सभा जैसे क्रांतिकारी किसान संगठन की नींव डाली। देश के आजाद होने के दौरान और उसके बाद भी किसानों के संघर्ष जारी रहे। बंगाल में बंटाईदारों के लिए तीन चौथाई हिस्से के लिए चले आंदोलन की बात करें या भूमि पर मालिकाना हक के लिए दक्षिण में चले तेलंगाना आंदोलन की, प्रत्येक आंदोलन ने संघर्ष व संगठन की नई ऊंचाई हासिल किया। इसके अतिरिक्त भी देश के विभिन्न हिस्सों में किसानों के संघर्ष चलते रहे हैं।

आजादी के साढ़े सात दशक बीत चुके हैं लेकिन आज भी हमारे देश के किसानों की हालत बेहद ही दयनीय है। आधुनिकता और विकास के दावे हवा हवाई है। कृषि अधिकांशतः प्रकृति पर निर्भर है। किसानों की सारी मेहनत बाढ़, सुखाड़, ओलावृष्टि, अतिवृष्टि की भेंट चढ़ जाती है और बैंक और साहूकारों के कर्ज तले दबा किसान इनके जुल्म व शोषण को झेलने के लिए बाध्य हो जाता है। नवउदारवादी नीतियों और कृषि के कॉरपोरेटीकरण की नीतियों ने खेती-किसानी और किसान को गहरे संकट में डाल दिया है। लाखों किसानों ने आत्महत्याएं की है। दिल्ली की बाहरी सीमाओं पर एक वर्ष से अधिक समय तक चले किसान आंदोलन और मौजूदा समय में एमएसपी की कानूनी गारंटी के लिए चल रहे किसान आंदोलन ने किसानों में नई ऊर्जा का संचार किया है। यदि 19 वीं और बीसवीं शताब्दी में चले किसान आंदोलन की अंतर्वस्तु को देखें तो समकालीन शासकों द्वारा कृषि को किसानों के हाथों से छीन लेने की साजिशों

के विरुद्ध अपनी खेती व जमीन का खुद को मालिक बनाने का प्रश्न इन संघर्षों का हमेशा केन्द्रीय विषय रहा है। आज का किसान आंदोलन भी इतिहास के किसान संघर्षों की ही कड़ी हैं और इसी सवाल के इर्द-गिर्द केन्द्रित है।

अभिनव कदम का यह अंक इतिहास के आइने से आज के कृषि प्रश्न को देखने व समझने की एक कोशिश है। आपकी टिप्पणियां और आलोचनाएं मौजूदा दौर में जारी कृषि संकट से निपटने के लिए हमें सक्षम बनाएंगी। इसी उम्मीद के साथ यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

जयप्रकाश धूमकेतु
संपादकः अभिनव कदम